स्वर प्रवाह

पल-पल का अपना संगीत और उसका प्रभाव होता है। यह हमारी मानसिकता से गहरे जुड़ा होने के कारण शरीर पर भी तदनुरूप प्रभाव डालता है। मन:स्थिति और प्रभाव के आधार पर ही आठों प्रहर के राग निर्धारित हैं। भैरव, ललित और विभास के स्वर-प्रभास से प्रभात की किरणें फूटती हैं और शांतमन भक्ति भाव में डूब जाता है। सूर्योदय के तेज के साथ मन का चांचल्य बढ़ने लगता है तो रागों के सुर भी हिंडोल के झूले में झूलते आसावरी की आशा के साथ दूसरे प्रहर में प्रवेश कर तोड़ी की सुरीली भावभूमि में रमण करते तीसरे प्रहर के सारंग में मुखरित होने लगते हैं।

चौथे प्रहर में भीम पलासी, मुलतानी और पांचवें प्रहर में पूर्वी, मारवा तथा श्रीराग के स्वर गुंजरित होने लगते हैं। छठे प्रहर में यमन और कल्याण तथा सातवें प्रहर अर्थात् मध्यरात्रि के आस-पास बागेश्वरी, खमाज, शंकरा, काफी तथा मियां की मल्हार तरंगित होने लगती है। आठवें प्रहर में दरबारी का दबदबा, चंद्रकौंस तथा कान्हड़ा का कमाल अपना असर दिखाने लगता है।

जिस प्रकार आठों प्रहर के अपने राग और उनका प्रभाव होता है उसी प्रकार छह ऋतुओं के भी अपने राग-प्रभाव होते हैं। इन ऋतुओं एवं रागों को चित्रकारों ने भी अपनी तूलिका से जीवंत किया है। महाकवि कालिदास ने अपने षट् ऋतुवर्णन में इन ऋतुओं के परिवेशजन्य प्रभाव का सशक्त वर्णन किया है। ये ऋतुएं हैं - ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और वसंत। वसंत को ऋतुराज कहा गया है। ये ऋतुएं एक दूसरे की उपयोगी और पूरक हैं। ग्रीष्म की प्रखरता से ही वर्षा का आगमन होता है और वर्षा से प्रकृति में सरसता और सर्जना की उर्वरता आती है। सरसता और सर्जना के पहियों पर ही वसंत की उमंग का रथ टिका होता है। जिस प्रकार राग का नाम लेते ही उसका स्वरूप और माधुर्य मानस पटल पर साकार हो उठता है उसी प्रकार ऋतु का नाम लेते ही उसका परिवेश जीवंत हो उठता है। प्रकृति और संगीत का अन्योन्याश्रित सम्बंध इस तथ्य से भी प्रकट होता है कि संगीत के सातों सुर प्रत्येक ऋतु में समाहित हैं और कुछ ऋतुओं के तो अपने विशेष राग भी हैं। यथा - वर्षा ऋतु से राग मेघ और मेघ मल्हार जुड़ा है तो वसंत से राग वसंत।

संगीत का एक शब्द है- तिहाई। वाद्यों पर सजने वाले राग के समापन से पूर्व तिहाई बजने लगती है तो यह समझ लिया जाता है कि राग का समापन होने वाला है। ठीक उसी प्रकार इस वर्ष के राग अर्थात् 2018 की तिहाई बज रही है और अपने अनुभवों और प्रभावों के साथ इस वर्ष का समापन हो रहा है। इस समापन में नववर्ष के उदय की किरणें समाहित हैं। किरणें चाहे प्रकाश की हों अथवा आशा की, दोनों ही अंधकार का नाश कर हमारा मार्ग प्रशस्त करती हैं तथा वर्तमान को सुखद बनाने वाली होती हैं। 'स्वर सरिता' का यह अंक भी आपके हाथों में इस आशा के साथ समर्पित है कि नववर्ष का अंक एक नई ऊर्जा, कलेवर तथा उपयोगी संदर्भ सामग्री के साथ आपसे रूबरू होगा।

देवदत्त शर्मा